ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष -14 अंक - 14 अक्टूबर -II, 2013 (पाक्षिक) माउण्ट आबू मूल्य 7.50 रु.

हिंसा रोकने के लिए आध्यात्मिक मूल्यों का प्रसार जरूरी

राष्ट्रपति भवन से हुआ 'अहिंसा परमो धर्म जागृति' अभियान का शुभारंभ

नई दिल्ली। राष्ट्रपति महामहिम प्रणब मुखर्जी ने कहा कि जिस देश में बेटियां, बहनें और माताएं सुरक्षित नहीं उसकी सभ्यता सुरक्षित नहीं रह सकती। राष्ट्रपति भवन में ब्रह्माकुमारीज़ और अन्य धार्मिक संगठनों के संयुक्त प्रयास से आयोजित 'अखिल भारतीय अहिंसा परमो धर्म जागृति' अभियान का शुभारंभ करते हुए उन्होंने कहा कि भारत में आ रही हिंसा की बाढ़ समाप्त करने के लिए हमें अपनी प्राचीन संस्कृति पर नजर डालनी होगी और विवेक से काम लेते हुए नये रास्ते तय करने होंगे। किसी भी धर्म में हिंसा या घृणा की शिक्षा नहीं दी जाती। सभी धर्मों के पैगम्बरों ने प्रेम, करूणा और नि:स्वार्थ सेवा की न केवल शिक्षा दी बल्कि लोगों को उस मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित भी किया। हमें यह मानना होगा कि हिंसा को किसी कानून, सरकारी बल या अधिनियम से समाप्त नहीं किया जा सकता। सामूहिक प्रयास करके शांति, सहिष्णुता, आत्म-नियंत्रण, अनुशासन, दृढ़ संकल्प जैसे आध्यात्मिक मूल्यों का प्रसार करके ही हिंसा को रोक पाना सम्भव है। समय आ गया है कि हिंसा को सहन करने की प्रवृत्ति त्यागें और सामूहिक प्रयासों से इस बुराई को जड़ से समाप्त करने का प्रयास करें।

राष्ट्रपति महामहिम प्रणब मुखर्जी के साथ दादी जानकी व अन्य धर्मों के शीर्ष प्रतिनिधि।

ब्रह्माकुमारीज संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने कहा कि दिनचर्या और समाज में आध्यात्मिक ज्ञान, मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने और निरंतर राजयोग अभ्यास से हर प्रकार की हिंसा को रोका जा सकता है।

अभियान की मुख्य समन्वयक ब्र.कु.आशा ने कहा कि किसी भी प्रकार की हिंसा को शांति के लिए डर एवं समाज के उत्थान में बाधक माना जायेगा। इस अभियान का लक्ष्य विभिन्न संस्थाओं का सांझा मंच तैयार करना है ताकि भयानक रूप से बढ़ रही हिंसा से मुक्त समाज की स्थापना की जा सके। यह अभियान परिवारों, विद्यार्थियों और जनसाधारण को हिंसा मुक्त बनाने के लिए प्रशिक्षण देगा। सुझाव व समर्थन जुटाने के लिए व्यापक सर्वेक्षण किया जायेगा। मूल्य आधारित शिक्षा एवं चरित्र निर्माण के लिए अहम प्रयत्न किये जायेंगे। मीडिया और सकारात्मक सोच रखने वाले अन्य व्यक्तियों को भारत सरकार द्वारा चलाई जा रही 'अहिंसा के दूत' परियोजना से जोड़ा जायेगा। कैथोलिक समाज के प्रवक्ता डॉ.डोमिनिक इमैनुअल, इस्कान के उपाध्यक्ष बी.एन.दास, जमायत-ए-इस्लामी हिन्द के सचिव मौलाना इकबाल मुल्ला, महाबोधि सोसायटी के भिक्षु आर.सुमितानंद, बहाई समुदाय के डॉ.ए.के.मर्चेंट, यहूदी समाज के सचिव ई.आई.मलेकर आदि ने भी इस अभियान को देश में शांति एवं अहिंसा की स्थापना के साथ-साथ संस्कृति प्रसार के लिए भी महत्वपूर्ण पहल करार देते हुए भरपूर समर्थन का विश्वास दिलाया।

परमात्म शक्ति का दवा में करें समावेश

ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल प्रभाग द्वारा चार दिवसीय माइंड-बॉडी-मेडिसिन विषय पर कॉन्फ्रेंस का आयोजन

शांतिवन। ब्रह्माकुमारी संस्था की मुख्य प्रशासिका दादी जानकी ने ब्रह्माकुमारीज मेडिकल प्रभाग द्वारा डॉक्टरों के लिए आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि लोग डॉक्टरों को भगवान का दूसरा रूप मानते हैं और उनमें भी उतना ही विश्वास करते हैं जितना कि भगवान के ऊपर। आधुनिक खान-पान के नाम पर लोगों ने गलत शैली अपना ली है जिसका खामियाज़ा लोगों को अनेक बीमारियों के रूप में चुकाना पड़ रहा है। आज लोगों का व्यसनों की तरफ झुकाव बढ़ता जा रहा है। इसके दुष्परिणाम से सिर्फ डॉक्टर ही लोगों को अवगत करा सकते हैं और उनमें जागृति पैदा कर सकते हैं। वर्तमान समय की चुनौतियों का सामना हम राजयोग के अभ्यास से ही कर सकते हैं। राजयोग से हम अपनी मानसिक शक्तियों को बढ़ाकर अनेक प्रकार की बीमारियों से सहज ही बच जाते हैं। ब्रह्माकुमारी संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने कहा कि आज के भौतिकवादी युग में सुख-सुविधा की वस्तुएं सहज ही उपलब्ध हो जाती हैं। शारीरिक श्रम न होने के कारण आज मनुष्य को अनेक प्रकार की बीमारियों ने अपनी चपेट में ले लिया है, जिससे व्यक्ति के जीवन से सुख-शान्ति दूर हो गई है। अत:अब हमें अपनी कार्यशैली में सुधार लाने की आवश्यकता है।मेडिकल प्रभाग के अध्यक्ष डॉ.अशोक मेहता ने कहा कि यदि हम मन के विचारों को बदल दें तो हमारा पूरा जीवन ही बदल जायेगा।

दादी जानकी, ब्र.कु.निर्वैर, ब्र.कु.मुन्नी, डॉ.अशोक मेहता, डॉ.प्रताप मिड्ढा, नेपाल के डॉ.वी.लामीचाने, डॉ.बनारसी, डॉ.सतीश तथा अन्य कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए।

वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.मुन्नी ने कहा कि डॉक्टर को देखकर मरीज का मन शांत हो जाता है और मरीज में धीरज आ जाता है। इसलिए मरीज को मानसिक और शारीरिक दोनों रूप से स्वस्थ करना होता है। यदि आप परमात्मा की शक्ति लेकर मरीज को दवाई देंगे तब वह डबल काम करेगी और मरीज जल्दी स्वस्थ हो जायेगा।

ग्लोबल हॉस्पिटल के मैनेजिंग ट्रस्टी डॉ.प्रताप मिड्ढा ने कहा कि दवा के साथ दुआ मरीज को स्वस्थ करने में काम आती है। मेडिकल प्रभाग के सचिव डॉ.बनारसीलाल शाह, डॉ.गिरीश पटेल ने भी कार्यक्रम को सम्बोधित किया।

1999 में मिस वार्ल्ड रह चुकी युक्ता मुखी ने ज्ञानसरोवर परिसर में आयोजित नर्सेस लीडर सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि

मनुष्य का आंतरिक सौंदर्य उसके कर्मों से निखरता है। संस्कारों के अनुसार ही स्वास्थ्य का रंग रूप विकसित होता है। हमारी सोच पूरे स्वास्थ्य को प्रभावित करती है।

मेडिटेशन ने बदली जीवनशैली

मेडिटेशन मन को शक्तिशाली बनाता है। मेडिटेशन से मन की सुषुप्त शक्तियां जागृत होने से अनेक प्रकार की समस्याओं को सुगम तरीके से हल किया जा सकता है। मैं पिछले कई वर्षों से ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा सिखाए जाने वाले मेडिटेशन का अभ्यास कर रही हूँ, जिससे मेरी जीवनशैली में सकारात्मक बदलाव आने के साथ जीवन जीने की श्रेष्ठ कला भी पाई है।